

25, 10. GOBB. 1, 4, 22. СІАКК. GABJ. 4, 19. Verz. d. Oxf. H. 216, a, 21.
 पद्योपयोगम् (यथा + उपयोग) adv. je nach dem Gebrauch, je nach Bedarf, je nach den Umständen RĪĀ-TAR. 4, 306. MĀRK. P. 23, 115. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen KATHĀS. 49, 180.
 पद्योपस्मार्त्तम् (यथा + उ^० absol.) adv. wie es Einem beifällt ÇAT. Br. 5, 2, 2, 2.
 पद्योपाधि (यथा + उ^०) adv. je nach den Bedingungen, — Voraussetzungen Comm. zu BHĪG. P. 10, 85, 25.
 पद्योत्त (यथा + उत्त) adj. wie gesät, der Saat entsprechend M. 9, 247.
 पद्योक्तम् (यथा + घोक्तम्) adv. je an seinem besondern Wohnsitz AV. 12, 1, 45.
 पद्योचित्य (यथा + चो^०) n. eine entsprechende Weise: पद्योचित्यात् in entsprechender Weise SĀH. D. 188. पद्योचित्यम् adv. nach Gebühr Spr. 1420. KATHĀS. 110, 119.
 यद् (von 1. य) 1) nom. und acc. sg. neutr. von य und als Thema am Anf. von comp.; s. u. 1. य. — 2) indecl. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8, 1, 30. 86. a) dass: विडुष्टे अस्य वीर्यस्य पूवः पुरा यदि-
 न्द्रावातिरः RV. 1, 131, 4. 7, 61, 2. एतत्तु न परे चक्रुर्नापरे ज्ञातु साधवः ।
 यदन्यस्य प्रतिज्ञाय पुनरन्यस्य दीयते ॥ M. 9, 99. यत्सा तेन परित्यक्ता तत्र
 न क्रोद्धमर्हसि MBH. 3, 2753. RAGH. 1, 63. त्वया हि मे बद्ध कृतम् — यद्-
 त्राहं समेष्यामि शीघ्रमेव MBH. 3, 2763. 2935. 2937. 2967. fg. PAT. zu P.
 7, 4, 77. Spr. 435. 1811. 2338. 2346. 4676. ÇĀK. 35. 38. 99. 136. 163.
 63, 3. RAGH. 1, 27. 2, 40. 12, 43. KATHĀS. 3, 64. HIT. 12, 10. 19, 4. 24, 11.
 LA. (III) 6, 19. fgg. नृषोसं यत् MBH. 3, 2371. इमत्यद्भुतं चात्र चकार —
 ज्ञानं यत् 15768. एष मे प्रथमः कल्पो यत् mit folg. potent. R. 2, 32, 58.
 एष मे परमः कामो यत् mit folg. potent. 8, 97, 13. eben so nach काल,
 समय, वेला P. 3, 3, 168. युक्तम् und अयुक्तं यत् R. 4, 16, 49. आश्चर्यं यत् KATHĀS.
 17, 28. एषैव मरुती लज्जा यत् RĪĀ-TAR. 4, 84. चित्ता मे पुत्र यद्दार्पा स-
 दृशो नास्ति ते वाचित् KATHĀS. 3, 57. डुष्कारं क्रियते त्वया — यद्यासि वि-
 ज्ञानं वनम् R. 2, 34, 35. MBH. 3, 2673. किं तवापकर्तं मया यदहं ताडित-
 स्वया DAÇ. 1, 36. अतस्तु किं दुःखतरं यदहं जीविततपे । नहि पश्यामि
 धर्मज्ञं रामम् 2, 64. MBH. 1, 5878. 5903. 6196. fg. स्थानानि किं किमवतः
 प्रलयं गतानि यत्सावमानपरिपाडरता मनुष्याः Spr. 807. वियोगे को भेद-
 स्तयज्ञति न ज्ञानो यत्स्वयममून् 243. किं यत्र वेत्ति त्वम् wie kommt es, dass
 du es nicht weisst? KATHĀS. 52, 281. न किल श्रुतं युवाभ्यां यत् ÇĀK. 78,
 18. जनास्वलतपन्यत्स स्वयं पीठमवातरत् RĪĀ-TAR. 3, 458. अभिज्ञाना-
 सि देवदत्त यत्काष्मीरेष्वसाम P. 3, 2, 113. Sch. स्मरसि देवदत्त यत्का-
 ष्मीरेषु वत्स्यामस्तत्रैदं भोद्यामहे 114, Sch. तद्वचः । यदहं पुत्रशोकेन
 संत्यजिष्यामि जीवितम् DAÇ. 2, 58. वक्तव्यं यदिह मया कृता प्रियेति MĀRK.
 167, 12. एते पत्निषा एव वदसि । यदस्माकं राजा किं करिष्यति । न क-
 स्याप्यावासं द्रवः PAÑĀT. 173, 13. 227, 7. HIT. 110, 3. 120, 12, v. l. LA.
 (III) 8, 2. 38, 2. so dass BHĪG. P. 1, 1, 1. — b) was das betrifft, dass:
 एको ऽकृमस्मीत्यात्मानं यन्नं कल्याणं मन्यसे । नित्यं स्थितस्ते कृष्येष पु-
 ष्यपापेतिता मुनिः ॥ Spr. 363. बलिनं मन्यसे यच्चाप्यात्मानम् — ज्ञास्य-
 स्यद्य समागम्य मयात्मानं बलाधिकम् MBH. 1, 5996. तद्यद् उपस्पृशत्य-
 मेध्या वै पुहूषः ÇAT. Br. 1, 1, 4, 1. 6. 2, 4, 22. यद्विज्ञम्भते तद्विद्योतते 10, 6,
 4, 1. — c) weshalb: किमार्गं ह्यस यत्स्तेतारं जिर्थासि RV. 7, 86, 4. श्रू-
 यतां यदस्मि कुरिषा भवत्सकार्शं प्रेषितः ÇĀK. 93, 1. wessentwegen MBH.
 3, 2571. fg. — d) wann, als: यत्सानोः सानमूर्हकत् RV. 1, 10, 2. यद् य-

तिं मृतः सद् ब्रुवते ऽध्वना 37, 13. 39, 3. 7, 3, 6. 5, 3. 19, 2. 23, 1. 30, 3.
 33, 2. यदीमाप्रुर्वहेति 66, 14. 103, 3. 4. यदत्र शिष्टं रसिनः सुतस्य यदिन्द्रो
 अयिबत् was übrig blieb. als Indra getrunken hatte, AIR. Br. 7, 33. —
 — e) wenn, wofern: यदिन्द्रं यावत्स्वमेतावदकृमीशीय RV. 7, 32, 18.
 40, 1, 1. 38, 4. 3, 10, 1. 3, 6. तस्य द्वावनध्यायो यदात्माप्रुचिर्यद्दशः ऽÇV. GRHJ.
 3, 4, 7. AV. 6, 120, 1. 12, 4, 9. स यदिदं पुरा मानुषीं वाचं व्याकुरेत् ÇAT. Br.
 1, 1, 4, 9. 14, 3, 4, 2. KAUSH. UP. 3, 8. त्यस्य राज्ञा मूर्धानं विपातपताद्यदि-
 तो ऽयास्य आङ्गिरसो ऽन्येनेदगापत् ÇAT. Br. 14, 4, 4, 26. मूर्धा ते विपति-
 व्यधन्मा नागमिष्यः KHĀND. UP. 5, 12, 2. 13, 2. — f) weil, da AK. 3, 3, 3.
 H. 1537. MED. avj. 30. M. 1, 10. 17. 2, 147. Spr. 4492. MBH. 1, 5589. 3,
 2221. 2244. 15784. R. 1, 33, 27. 59, 17. 64, 12. 2, 33, 11. 68, 2. 74, 25. DAÇ.
 1, 39. 2, 7. 51. Spr. 2336. 2398. RAGH. 1, 87. ÇĀK. 21. 138. 182. 9, 13, v. l.
 107, 2. KATHĀS. 18, 173. 52, 76. HIT. 6, 3. 40, 22. NAIHU. 22, 46. — g) auf
 dass, damit: लङ्कायां यत्तु पश्येयमभिषिक्तं विभीषणम् । वृत्स्ततो कुरि-
 ष्छैरराज्ञगाम सद्दानुगः ॥ R. 6, 97, 10. किं नु शक्यं मया कर्तुं यत्ते न क्रुध्यते
 नृपः MBH. 1, 5921. — h) यदपि obgleich MEGH. 28. — i) यद् wie — एवम्
 so ÇVETĀÇV. UP. 3, 4. — k) यच्च dass mit potent. nach nicht für möglich
 halten, nicht glauben (hoffen), nicht leiden, tadeln, Wunder P. 3, 3, 147.
 fgg. VOP. 25, 14. न अद्ध्ये (न मर्षये, गर्हामहे, आश्चर्यमेतत् यत्र तत्रभ-
 वान्वृषलं याजयेत् P., Sch. Vgl. MED. avj. 39. — l) यदा α) oder TAİK. 3.
 4, 4. Spr. 289. RĪĀ-TAR. 4, 59. 3, 441 und überaus häufig bei den Com-
 mentatoren. — β) entweder dass: न चैतद्विद्यः कतरन्नो गरीयो यदा ज-
 येम यदि वा नो जयेयुः BUAG. 2, 6.

यद् am Ende eines adv. comp. (०यद्म्) = यद् = 1. य gaṇa शरदादि
 zu P. 5, 4, 107. VOP. 6, 62.

यदर्थं (यद् + अर्थ) adj. welches (rel.) Ziel vor Augen habend, was be-
 zweckend BUAG. P. 8, 6, 14.

यदर्थम् (wie oben) adv. 1) weshalb, weswegen, wessentwillen (rel.) u.
 s. w. MBH. 1, 6149. 3, 5944. HARIV. 3790. R. 1, 13, 14. 66, 7. 2, 32, 55. 3.
 48, 10. 4, 16, 47. fg. ÇĀK. 93, 1, v. l. RĪĀ-TAR. 6, 167. BUAG. P. 4, 7, 27.
 23, 2. 8, 3, 11. 24, 2. 29. MĀRK. P. 18, 3. — 2) da, quom: नूनं देवं न शक्यं
 हि पौरुषेणातिवर्तितुम् । यदर्थं यत्नवानेव (so die ed. Bomb.) न लभे वि-
 प्रतां विभो ॥ MBH. 13, 1932.

यदर्थं adv. = यदर्थम् 1) Spr. 2343. fg.

यदा (von 1. य) adv. wann, als (P. 5, 3, 15. VOP. 7, 101); wenn; folgt
 तदा. ततस्, अथ, आदित्, तर्हि (BUAG. P. 5, 8, 11) oder einfacher Nach-
 satz. RV. 1, 82, 1. वृत्रमिन्द्रं यदावधीः 103, 8. 115, 4. 163, 7. 4, 33, 2. 24, 8.
 यदा मरुः संवर्षणाद्यस्थात् 7, 3, 2. 42, 4. 8, 12, 26. 10, 23, 3. 68, 6. AV. 3,
 13, 6. यदानुम्मादितो ऽसति 6, 111, 1. 41, 4, 5. 8, 11. 12, 4, 29. 14, 2, 20. AIR.
 Br. 7, 14. 29. 8, 5. ÇAT. Br. 1, 1, 4, 22. 4, 22. 8, 1, 3. 13, 1, 5, 4. 14, 1, 1, 24.
 2, 1, 4, 2, 25. 6, 9, 22. KHĀND. UP. 6, 15, 2. TAITT. UP. 2, 7. यदा सकृलं संप-
 द्यते ऽथोत्थानम् ÇĀK. ÇR. 13, 29, 21. यदाधिगच्छेत् GOBB. 1, 9, 20. यदा-
 स्मि कुमारं ज्ञातमाचक्षीरन् 2, 7, 17. ऽÇV. GRHJ. 1, 14, 2. KAUC. 31. — यदा
 स देवो जागर्ति तदेदं चेष्टते जगत् M. 1, 52. 54. 56. यदा भावेन भवति सर्व-
 भावेषु निःस्पृहः । तदा सुखमवाप्नोति प्रेत्य चेत् च शाश्वतम् ॥ 6, 80. MBH.
 3, 15612. R. 1, 41, 15. ÇĀK. 132. Spr. 405. 2354. fg. 2358. 3902. 4803—
 4809. HIT. 98, 18. LA. (III) 7, 2. 24, 8. यदाहं शब्दं करोमि (= करिष्यामि)
 तदा त्वमुत्थाय सत्वरमपसरिष्यसि HIT. 23, 8. यदा न प्रतिषेद्धारस्तयोः स-